

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

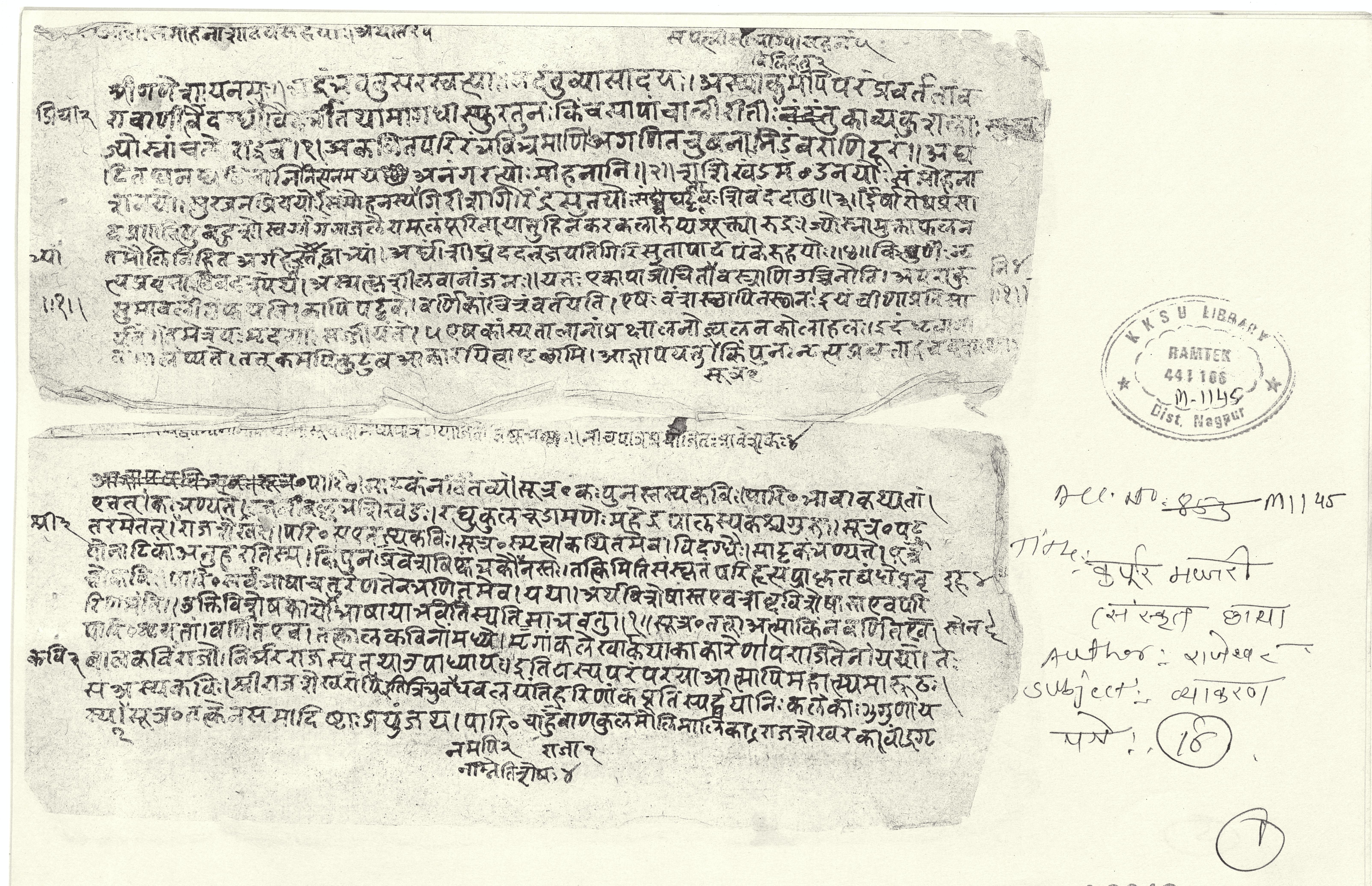
https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



ारामित विवाद में प्रमान के स्वति । १० । विद्या स्व पिता प्राणिक्य महिष्य प्रमाणिक्य महिष्य स्व प्रमाणिक्य महिला अवस्थित । १० । अवस्थित विद्या महिला अवस्था महिला प्रमाणिक के प्रमाणिक के

मा अधिका वंड वित्र ताम्याणिहारिहा बाहि वेजानिताः।१००० जियो मानं मं च्छा दत्त बहु जा ते हें कि ते गो ते शिक्ष हु क्या निवंच दत्ता वालिक को ति जा हु के लिय मं जा में हु के लिय में ह

## पितारिक तिनावार्

विश्वीमार्तीः वित्यदृद्धवर्षम्यविरच्ना । जाश्चे याद्वं यं यम्यानि सामस्य विश्वयत्वयाति। तथ्य विश्वयत्वयात् । तथ्य विश्वयत्वयात् । तथ्य विश्वयत् । विश्वयत

िह्न ति मण्डिया यवचने मण्यकादेवा। मिलाविचक्षणा अस्मावं पुरते। स्व प्राणा जिल्लाविमा निस् कर्णा चिता विच प्रावता अर्जे पुरते। सार्णे प्राणा पतिरंत्र प्रति। विद्व यतदेवी आता प्रयतित्य का। तस्तु यणं धत्क प्रयाद्याणे वर्जे । सार्णे हिणाया पतिरंत्र प्रति। विद्व यतदेवी आता प्रयतित्य का। चित्र काणिति मेखका निः स्वति ता संभागिक निर्माण प्राणा प्राणा प्रति क्षित्र मुख्य बहुता ता रूण्य प्रणा क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र मुख्य बहुता ता रूण्य प्रणा क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षेत्

काम्बाद्यहेनोवध्यत्रः शारवाः फरमानिषुष्णिभवेभवन्य स्तिरे

विह्नु आः दाएँ सील्नीब्रासु जि। ह क्रप्नोग विद्ये। के जिन्नोग स्थाते हिनि। ह क्षानि विद्वित ए बंभेन्य ण लि। ति से महाब्राह्मणा निर्माति ने सहाब्राह्मणा निर्माति निर्माति

गणाः।तन्त्रास् अप्रवस्तये पम्पन्त्रसाध्ये॥ १३॥ तङ्गा कि कि यता भरता। वयस्पा । । । । । रार्वच नपारत्मा विद्य शिक्षाय थिया परा व्योग मनगरात्त्रमया एक दृष्टा वा निर्माद है वा स्थाप आमापतां। ने रे॰ अनेर वेपे। राजा। अवनापतां प्राणिमाहिरणांकः। महीतने। नेर॰ प्याने नार्याने। राजा। राजा। आध्यित्यता प्योतांत्रमत्रो भारतो चनयुगं कन्ना। स्रग्नात्यके। मुखाहमाप्ते वितवेदाव

विनिज्ञाने द

आर्गिमानासरामासरामा

स्तिन 3

इवचरंदाणिनियहिंदवः। यहेकंमि नणां चलं नियमितात्तरहानके कि किता आनीता इयम यह देन हो गरी है या ती खरे णामुना। | २४।। अपिच। एकेन णाणेन हिनेन निने नाये ती न ह्या चंदे घ गरहत्र मंसमानं। वितिविद्दे पायतेनं कर्माविसय्प्रयति अन्त्राम चंक्रमणात् वितितमं पायरे गर्पाविद्र ह्यानायमुकानरणोद्ययायासरंगम्गक्तम् इनायाः अगर्रोष्ठकोद्यामितन्त्र नायाः सोंदर्धि सर्व खामगादृष्टिः।। १६॥ ना विकाएषा महाराजो को विषत्न में नार अरखान हो। क्षा सोंदर्धि सर्व खामगादृष्टिः।। १६॥ ना विकाएषो महाराज्या महाराज्या अहिनारा व्यरस्य इस यामादृष्ट अधितापिमोरी स्वते। एषो पिड्यो तिस्वरो। एष पुनः विरिज्ञ तः तत्राकिमिति एतस्य दे वितास ित्यस्यापिद्धिः मां बहुम-पत्। राजा। यतुमुक्तांश्रवणात्रुणसहसातीक्णाः कर्णधाक्ष छ्याः ा भा भिष्टिनकेतसार्ग्रेमदसदोणासद्देशिवा तलर्पर्योभनननुध्वातितो ज्योग्नयान् के स्नाधितोष्ठकानो चनरेणुने व खुपितो जातोस्थित्र यांवरे॥ २०॥ अहो एतस्याः रूपनो याम्यां मन्यमध्यां वेव विते वित्र मुख्याहो। नोबाहुन्यां रमण प्रत्ये विष्तुं यातिहान्यां नेत्र



स्वेतरण इस्टिति क्रियमाणा वमानं तस्य स्वेममिक्टिरियुं या तिएका निवेती। दर। कर्यं स्वान भी तिविते प्रनाणि समुनारित क्रिक्षणणि क्रमणि व्या अप्य ना स्व प्रमुक्त प्रिक्रिक्र क्रिक्षणणि क्रमणि व्या अप्य ना स्व प्रमुक्त प्रिक्रिक्र क्रिक्षणणा अप्य ना स्व प्रमुक्त प्रिक्र क्रिक्षणणा प्रमुक्त विक क्रिक्षणणा प्रमुक्त विक स्व निवेति हैं। विक क्रिक्षण विक प्रमाण क्रिक्षण क्रिक्णण क्रिक्षण क्र क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्ण क्रिक्षण क्रिक्ण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्षण क्रिक्ण क्रिक्ण

## अशितामहाधितश्चदुत्रीनाश

एनेषामितिन्द्र व्यविते। यतः इमेहेणित्रणिति के भेर्यानं द्र एत्न एत यो संयोग करो अवितो महाचित्र या एवाणिमहीन तरम स्वतिकृष्टिनी। देहाँ तरणदेश का देवी। विवक्षणे। विज्ञ स्वर्गण स्वीसु तक्षणाया निष्या परिवास स्वतिकृष्टिने। विज्ञास प्राचित्र याः एता यत्वाणाः यद्देवी आङ्गाप याता। देवी। आर्थण स्वर्णा ये देवी। आर्थण स्वर्णा ये ता प्राचित्र या प्राचित्र याः एता यत्वाणाः नेषण स्वर्णा स्वर्णा विवास स्वर्णा आत्वा त्य प्राचित्र विवास स्वर्णा आत्वा त्य प्राचित्र के ता प्राचे का ता प्राचित्र के ता प्राचे का ता स्वर्णा के ता प्राचे का ता स्वर्णा के ता प्राचे का ता स्वर्णा के ता स्वर्णा



निश्मिषं।।तथाप्रयनविधिपायधानिकम्पिकणित्यसंतथायमुर्येऽचलंदिनानिनी प्रयादिणिमा। ३१।१०० दे वीर्ध्यायकणित्रसं एष्ट्रामानि । का एषेति। एदिमुणिप्रमाय एच प्रयिन्पिति वद प्रकासमिक कि । वाङ्गाआसने एतस्या। विद्रु एतन्प्रमु उत्तरीय । विद्रु १ अवित्रमा अति वद्या सामानिक स्वार्थित । वाद्योविद स्वार्थित । विद्रु १ अवित्रमानिक स्वार्थित स्वार्थित । विद्रु १ अवित्रमानिक स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित । विद्रु १ अवित्रमानिक स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित । विद्रु । विद्रु । विद्रु । विद्रु । विद्रु विद्र

= असं तार्रागबतोक ये ति बन्ते ती मिप इति बार्यः ४

त्र हो गमानो ॥ २०। आहा मणि मे ध्यावंदिने गमिष्ठावः। । । विद्वानाः वर्षे यां गढ निर्वाव हे ।। । विद्वानाः देन स्थापनाः त्र अवस्थाने हिल्ला स्थापनाः विद्वानाः विद्वानाः विद्वानाः स्थापनाः त्र स्थापनाः विद्वानाः प्र स्थापनाः स्यापनाः स्थापनाः स्थापनाः स्थापनाः स्थापनाः स्थापनाः स्थापनाः स्था

श्रां थाले ने स् द्वितिवरं तक्षणिविद ग्या॥४॥ ये तस्याः तीक्षण च्यु च्यु विजाग दृष्टाः तेका म चं द्रम्थु भ्यू च ममारणी याः ये से पुनिविष्ठित तासक आणि दृष्टि वर्तते ति तत्र द्वाग्रति हिन्दा योग्याः १। था। अये व्याग्या स्वरणिन यन यो स्वर्या मध्ये पुनः क्षणि त्वृत्र व्याग्या । या प्रविद्य व्याग्या व

 एकान्यास्य होज दिन्न विचाय प्रमुखसपुरतः मनावस्य के अस्मन उचितरे भरे विवेदयामि। विचय वेदे द्रायते विच एक् विचयान प्रमुख स्वार्थित सर् से तक्षार्थित र कि स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य

## अग्रण्यं संस्तालप

## उन्ससात्र

भारिताहम्द्रपुर्द्विमवदिनातं एणलयनायाः।१०॥ विश्वविद्याययेष्टं प्रसाधने असाधिताहमारी॥ याश तहितिसानमरिवि कर्षाता हिंदी स्थान विद्या यते । ॥ यस्या दृष्टिसरतः श्रवता सङ्गतं स्याः योग्ययाविद्या प्रित्य हिंदी स्थान हिंदी यते । ॥ यस्या दृष्टिसरतः श्रवता सङ्गतं स्याः योग्ययाविद्या प्रित्य हिंदी स्थान हिंदी स्थान हिंदी स्थान हिंदी हिंदी स्थान हिंदी हैंदी हैंदी

तस्यासायस्याः विद्याः सिन्दित्ताह्माः स्वासंग्रतीद्वाहेर्यः सर्यात्रीविद्वाहेर्यः स्वयास्यते ॥ क्षेत्रेताष्ट्रमायः स्वासंग्री हे स्वयास्य सिन्दित्ता सिन्दित्ता स्वयास्य सिन्दित्ता स्वयास्य सिन्दित्ता स्वयास्य सिन्दित्ता सिन

साधिकारण वण गामि। उपविश्वित सन् न गाणि हें चरण पे के ब्रे षो ए गें। आकार पता वम दूर्व न जनाण न प्रवाद के लाश । अस्य वादि हो ल न ली लाइ मिल से साम साधिका कि की प्राणि कि के ला है। साम जिसे के बी माणि कि कि जी राखे ने । १२ ।। ताने के ला हि स्टे से साम हों हों के लिया है। ता है के प्राणि कि की साम दे ने पा कि की साम हों । १३ ।। ता है के प्राणि कि की साम दे ने पा की साम के लिया है। ता है

To

वेभनग्रहिषेद्वप्रगिवद्धा ध्रेमे श्रिक्ष ध्रेमे शिक्ष भ्रम् भ्रमे भ्रमे श्रिक्ष भ्रमे भ्रमे श्रमे श्रमे

विश्य निर्वाताद्वा। समादिशं रा । वपस्पाति पुनः से देश विश्वतामान विष्णाति । त्रा ज्ञानादि। विश्व प्रा प्रमावन तर । विच्य निर्वात विश्व प्रा प्रमावन तर से विश्व विष्व विश्व व



विद्रश्यम् नम् अप्रयोगिका विचलक्षेपुम श्रीनासि। महारा अस्पर र्यन मिति। विचलत्य नमहो ना शां विद्रश्य व्यव व्यव नमर्मा ना शां विद्रश्य विचलत्य नमर्मा शां विद्रश्य विचलत्य मर्मा विचलत्य नमर्मा शां विद्रश्य विचलत्य प्रयोगिका श्री विचलत्य विद्रश्य प्रयोगिका श्री विचलत्य विद्रश्य प्रयोगिका त्य विचलत्य विद्रश्य विचलत्य विच

कुर्ममग्रविद्याम्माद्धितयोः॥तिध्वनपित्रेतिन्त्रान्गणिन्न स्वन्न निर्वेतार्यादितादेवन्द्रः॥१॥माश्यवप्रमान्न्य संक्रित्र स्मारमञ्जूषान्य प्रविश्ववन्त्रस्व स्वाद्धियाय्याच्याः वादिष्ट्राम्मान्यः स्वाद्धियाय्याः स्वाद्धियाः स्वाद्धियः स्वाद्धियः



त्वनात्वारे एस्पञ्चममापिस्तं प्रहणारा । तत्वण पननी द राह्य स्य प्रेश विकास स्थान द्वार सार प्रेष्ट ने त्व विकास स्थान द्वार सार प्रेष्ट ने त्व विकास स्थान द्वार सार प्रेष्ट ने त्व विकास स्थान विकास स्थान द्वार सार प्रेष्ट ने त्व विकास स्थान स्था

12)

ब्रह्म विद्या महिता आह्न स्मादिता का शहर चार विद्या के स्वाद के स

वंद्रताद्वानिका वागमंगपं अमिनश्च णाप्त्रणिविद्राणी वयस्य स्पेप का सं कारे राज्या वा का सम्मान का स्वार्णाणमान सं आमा सिनिका सामिन के स्वार्णाणमान का स्वार्णाणमान सिनिका स्वार्णाणमान सिन्द्रिका स्वार्णाणमान सिन्द्रिका स्वार्णाणमान सिन्द्रिका सिन्द्रिका

निविद्यासिम्बारुण्याधितवेणासिम्याराः विमुक्कुमेनापि छ्रेमदितलनिविप्या गारि स्थानासिसंद्रापुनर्या नुषस्याप्रशाणान्य न्वतिहारिल्यायामित्रा निविद्ये गारि स्थानास्य स्थाप्ति स्थाप्ति स्थापित्र स्थाप्ति स्थापित्र स्थाप्ति स्थापति स्यापति स्थापति स्यापति स्थापति स्यापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्य

क्षेत्र में विश्वास्य या या या या या या या या या प्रमुख पूर्व या प्रस्ते लो य न हो या ये व द्या या समागद्द साम्रविक्तितामु हिया हा चम द्रांग च मी बामातितंब गुरु रिप्तामियि उद्यम्बन्धिन्यसिम्बनाताः म्हनेजयमहावये । जेसान्वति॥१भा कुर्व। वियम्बन ने वास्त्र हो हम सिण सिवा जा त्रा संद त्रा त्रातने प्रवेति गढ़ स्त्रा चलन वा अधिया गावरे। ज विशे पित हो हो हो है रे वप च से निवध त्र साहें है हो है । व प्रदेश साहित्य की विशेष न कि विकास सिनावकामेल मामिग्राविष्य मिया विषय में प्रविषय ने इस हो स्ट्री द्रश्या अभिवज्ञा अग्रान् किए तितालय ता नित्तः तथा चुक्न निर्मतं त्रवल तिवृत्ते चा जाड

,CREATED=23.10.20 10:23 TRANSFERRED=2020/10/23 at 10:26:49 ,PAGES=17 ,TYPE=STD ,NAME=S0004451 Book Name=M-1145-KUPUR MANJARI ORDER\_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF FILE11=0000011.TIF FILE12=0000012.TIF FILE13=0000013.TIF FILE14=0000014.TIF FILE15=0000015.TIF ,FILE16=0000016.TIF ,FILE17=0000017.TIF

[OrderDescription]